ST PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR

Recognized by ERC, NCTE Bhubaneswar

Affiliated to L.N. Mithila University, Darbhanga & Bihar School Examination Board, Patna

PROGRAM LEARNING OUTCOMES

&

COURSE LEARNING OUTCOMES

PROGRAMME: DIPLOMA IN ELEMENTARY EDUCATION (D. El. Ed.)

छात्र सक्षम होंगे -

1. प्रशिक्षु एक समर्पित प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के रूप में विकसित हों जो समाज के पुनर्निर्माण में सहायक बनें।

2. प्रभावी प्राथमिक शिक्षक बनने के लिए आवश्यक ज्ञान, शैक्षणिक कौशल और सकारात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।

3. नए उपकरण और तकनीकें हासिल करें जो उन्हें प्रारंभिक शिक्षा की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से जवाब देने में सक्षम बनाएंगी।

4. प्राथमिक विद्यालयों के विविध शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ समुदाय के साथ समन्वय में काम करें।

5. शिक्षाशास्त्र के उपकरण के रूप में आईसीटी, कार्य शिक्षा, दृश्य कला और प्रदर्शन कला का उपयोग करके उनकी सीखने की शैली का पोषण करें।

6. पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से वितरित करने के लिए संवाद करने, प्रदर्शन करने और अभ्यास करने की उनकी योग्यता विकसित करें

7. रचनात्मक और स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहित करें और उन्हें अपना ज्ञान स्वयं बनाने में सक्षम बनाएं।

8. शैक्षणिक दृष्टिकोण के बारे में उनकी समझ का निर्माण करें और प्रारंभिक शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार के बीच संबंध स्थापित करने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि विकसित करें। 9. शिक्षकों, बच्चों और समुदाय के बीच अंतर्संबंध, तालमेल और समन्वय को ध्यान में रखें।

10. बच्चों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों को समझें और उन्हें संवेदनशीलता और करुणा से संभालें

11. प्रारंभिक स्तर के शिक्षार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा, लिंग परिप्रेक्ष्य, पर्यावरण संबंधी चिंताएं, सामुदायिक ज्ञान, स्वतंत्र सोच, नवाचार और रचनात्मकता से संबंधित मुद्दों को जानें।

12. प्रारंभिक शिक्षा की बेहतरी के लिए चिंतनशील अभ्यास और अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देना।

13. प्रारंभिक शिक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षा/शिक्षण/सीखने के समसामयिक सिद्धांतों को समझें और इसे अपने कक्षा शिक्षण में एकीकृत करें।

14. न केवल वर्तमान शैक्षणिक प्रथाओं पर चिंतन करने की दक्षता हासिल करें बल्कि अवलोकन, प्रयोग, विश्लेषण और प्रतिबिंब के आधार पर अपने शैक्षणिक ज्ञान का निर्माण भी करें।

प्रथम वर्ष

FIRST YEAR

F-01(समाज शिक्षा और पाठचर्या की समझ)

1. बच्चे और बचपन से सम्बन्धित बिभिन्न परिप्रेक्षों की समझ को विकसित करना |
2. बचपन को आकर देने वाले ऐतिहासिक , सामाजिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कारको को समझना |
3. विद्यालय की भूमिका को समाजीकरण के सन्दर्भ में विश्लेषित करने की समझ बनाना |
4. शिक्षा एवं ज्ञान की अवधारणा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना |
5. भारतीय चिंतको की शैक्षिक रचनाओ के आधार पर उनकी शैक्षिक विचारो से अवगत होना |तथा समकालीन परिदृश्य में उन विचारों की सार्थकता की समीक्षा करना |
6. पाठ चर्या की समझ एवं स्थानीय पाठ चर्या की आवश्यकता एवं महत्व की समझ बनाना |

F-02(बचपन और बाल विकास)

1. बचपन के बारे में मनो –सामाजिक अवधारनाओं की समझ को विकसित करना |
2. बाल विकास की अवधारणा तथा इसका सिखने से अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना |
3. बच्चो के शारीरिक एवं मनोगत्यातामक विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना |
4. सीखने में सृजन्नात्मकता के भूमिका को समझना |

5. बच्चो को सीखने- सिखाने में खेल की भूमिका का विश्लेषण करना |
6. बच्चो के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पलुओं से अवगत होना |
7. संवेगात्मक एवं नैतिक विकास की अवधारणा को समझना |

F-03(प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा)

1.प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल से जुड़ी प्रमुख अवधारणाओं की समझ बनाना।

 2.प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यचर्या तथा पाठयक्रम के माध्यम से बाल विकास
के विभिन्न आयामों एवं इसके महत्त्व को समझना।

3. बिहार के संदर्भ में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति और प्राथमिक
शिक्षकों की भूमिका पर समझ बनाना।

 4.शिक्षकों को कक्षा-कक्ष में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित
अवधारणाओं के अनुरूप गतिविधियों के आयोजन के कौशलों को विकसित करना ।

F-04(विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास)

1. विद्यालय संस्कृति एवं प्रबंधन के विभिन्न आयामों की समझ बनाना।
2. विद्यालय में नवाचारी परिवर्तन के विभिन्न संसाधनों एवं तरीकों को समझना।
3. कक्षा प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना तथा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के संदर्भ में उनका विश्लेषण करना।
4. विद्यालय में विद्यार्थियों के आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था को समझना तथा विश्लेषण करना।
5. शिक्षकों के वृत्तिक विकास के विभिन्न आयामों को समझना।
6. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एव सरकारी योजनाओं की समीक्षा एवं संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करने की योग्यता विकसित करना |

F-05(भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास)

1. भाषा की प्रकृति के बारे में समझ बनाना।
2. प्रत्येक भाषा में निहित बहुभाषिकता को समझना।
3. बच्चे भाषा का अर्ज न और उपयोग कैसे करते हैं, इस प्रक्रिया को समझना।

4. विषय के रूप में भाषा और विभिन्न विषयों के माध्यम के रूप में भाषा की समझ विकसित करना।
5. विद्यालय का बच्चों की भाषा पर पड़नेवाले प्रभावों का अध्ययन करना।
6. भाषा और समाज के मध्य रिश्तों के बारे में विवेचनात्मक समझ विकसित करना।
7. भाषा के सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक संदर्भो को समझना।

F-06(शिक्षा में जेण्डर और समाववेशी परिप्रेक्ष्य)

1.समाज के समावेशी परिप्रेक्ष्य की अवधारणा तथा आवश्यकता को समझना ।

2. समाज में जेण्डर समानता की अवधारणा तथा औचित्य को समझना ।

3.विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दिव्यांगजन) की आवश्यकतानुरूप शिक्षा के स्वरूप को समझना ।

4. विद्यालय के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समावेशी परिप्रेक्ष्य एवं जेण्डर समानता के आलोक में
विश्लेषित करना ।

5. विद्यालयी माहौल को समावेशी एवं जेण्डर समानता के अनुरूप निर्मित करने क के तरीकों को समझना |

F-07(गणित का शिक्षणशास्त्र-1 प्राथमिक स्तर)

1.दैनिक जीवन में गणित की अवधारणाओं का उपयोग कर पाने के कौशल विकसित करना एवं
उससे कक्षा में बच्चों के सीखन में मदद लेने के तरीके सोचना।

2. बच्चे क्या जानते हैं, इसके बारे में समझना ।

3.गणित की बुनियादी अवधारणाएं और इनकी सीखे जाने की प्रक्रिया समझना, यथा-संख्या व उससे जुड़ी अवधारणाएं, मापन की समझ एवं आकड़ों का प्रस्तुतीकरण आदि।

4. गणित सीखने की प्रक्रिया के मुख्य पहलुओं को समझना व विभिन्न प्रत्ययों को सिखाने के लिए संभव तरीके सोच पाना ।

F-08(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1 प्राथमिक स्तर)

1. प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में समझ बनाना ।
2. प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक भाषायी कौशलों को उन पक्षों को समझना जो प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक हैं ।

3. प्राथमिक कक्षाओं मे सुनने के कौशल की सामर्थ्य में बढो तरी और बोलन की प्रक्रिया में विविध विशिष्टताओं को अर्जित करना ।
4. बच्चों के भाषायी कौशलों को विकसित करने के सैद्धांतिक पक्षों के बारे में समझ बनाना ।
5. हिन्दी-भाषा के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के तरीकों से अवगत होना ।
6. उद्देश्यपरक सीखने की योजना, उपयुक्त कक्षा प्रक्रियाओं के नियोजन तथा संचालन के बारे में समझ विकसित करना ।

F-09(PROFICIENCY IN ENGLISH)

1. To understand the need and importance of English at present time.
2. To strengthen the student-teacher's proficiency in English.
3. To enrich their vocabulary and brush up their knowledge of grammar of English in context.

4.To enable student-teachers to link their proficiency with pedagogy.

F-10(पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र)

1. पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य व उसकी प्रकृति को समझते हुए बच्चों के बौद्धिक, बोधात्मक व संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में उसके महत्व को पहचानना ।
2. पर्यावरण अध्ययन में निहित अवधारणाओं व उनसे संबंधित तथ्यों का विश्लेषण करने का सामर्थ्य विकसित करना।
3. अपने परिवेश के अनुभवों के आधार पर बच्चों में अवधारणाओं का विकास व परिष्करण के तरीके जानना व विकसित करना।
4. कक्षा शिक्षण में संवाद व गतिविधि के माध्यम से पर्यावरणीय प्रक्रियाओ और परिवर्तनों की व्याख्या करने की योग्यता प्राप्त करना।
5. प्रकृति, व्यक्ति एवं समाज के विभिन्न पहलुओं की संरचना और प्रक्रियाए एवं उनके बीच के अंतर्सम्बंधों को जानने –समझने की जिज्ञासा व ललक उत्पन्न करना।
6. व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्र एवं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ एवं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ में समझने की योग्यता विकसित करना ।
7. पर्यावरणीय परिघटनाओं मे प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अलग-अलग पहलुओं को समझते हुए समेकित दृष्टिकोण विकसित करना।
8. सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, सहिष्णुता एवं समता-समरसता का भाव विकसित करना।

9. लैंगिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभेदों के प्रति संवेदनशील तथा समालोचनात्मक दृष्टी विकसित करना ।
10. बाल मनोविज्ञान व बच्चे कैसे सीखते हैं की समझ को व्यापक, तर्क पूर्ण एवं क्रमबद्ध करने का प्रयास करना।
11. खोजी व करके सीखने की प्रवृति उत्पन्न करना तथा अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत करना।
12. कक्षा शिक्षण व अन्य गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना ।
13. दुर्घटनाओं/आपदाओं के समय उचित एवं तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हुए बचाव व निदानात्मक उपायों पर भी समझ बनाना ।
14. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में विभिन्न शिक्षण-विधियों के उपयोग एवं उनके विकास करने की क्षमता बढाना ।
15. स्थानीय संसाधनों का सृजनात्मक उपयोग करते हुए शिक्षण-सामग्रियों का निर्णय करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार नवाचार कर उद्देश्यपूर्ण बनाना ।
16. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में समझते हुए उसके तरीके विकसित करना ।

F-11(कला समेकित शिक्षा)

1. प्रशिक्षुओं को कला समेकित शिक्षा की व्यापक अवधारणा एवं स्वरूपों से अवगत कराना।
2. सीखने-सिखाने में कला समेकित शिक्षा की प्रभावी भूमिका का विश्लेषण करना।
3. कलात्मक सृजनशीलता को बच्चें के सह-शैक्षिक (को-स्कोलास्टिक) विकास के तौर पर समझना।
4. दृश्य कला से सम्बंधित विभिन्न सामग्रियों का निर्माण, शिक्षण में प्रयोग की योजना एवं क्रियान्वयन की समझ विकसित करना ।
5. प्रदर्शन कला की अवधारणा तथा उसके विविध स्वरूपों से अवगत होना ।
6. प्रदर्शन कला के विविधि स्वरूपों को विद्यालय में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ना।
7. विद्यालय में कला अनुभवों के अवसरों को विकसित कर पाने के तरीकों को समझना ।
8. कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन के विभिन्न उपागमों एवं तकनीकों को जानना एवं विद्यालय में उनका प्रभावी प्रयोग करना ।

F-12(शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.))

1. आई.सी.टी. की अवधारणा तथा शिक्षा मे इसकी उपयोगिता से अवगत कराना ।

2. आई.सी.टी. के विभिन्न उपागमों को शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग करने का कौशल विकसित करना।
3. आई.सी.टी. के विभिन्न उपकरणों जैसे - टी°वी°, रेडियो, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, रिकार्डर इत्यादि के प्रयोग व रख-रखाव का कौशल विकसित करना।
4. शिक्षण अधिगम को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिये इन तकनीकों के महत्त्व को समझना ।
5. इन्टरनेट, ब्राउज़र, ई-मेल तथा सर्च इंजन का शिक्षा में कैसे प्रयोग हो, ये जानना व प्रयोग करना।
6. विद्यालय के विभिन्न विषयों के शिक्षण में आई.सी.टी. का समावेश कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाना।

द्वितीय वर्ष

SECOND YEAR

S-01(समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा)

1. शिक्षा के सामाजिक विमर्श के अंतर्गत विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण करता ।
2. शिक्षा को प्रभावित करनेवाले महत्त्वपूर्ण राजनैतिक संदर्भो को जानना ।
3. बिहार के विशेष सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठिभूमि में विद्यालय की परिवर्तनशील प्रकृति को समझना ।
4. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विद्यालय शिक्षा के बदलते सरोकार को समझना ।

S-02(संज्ञान, सीखना और बाल विकास)

1. संज्ञानात्मक एवं सम्प्रत्यात्मक विकास की अवधारणा तथा सीखने के संदर्भ में इसके सैद्धांतिक आधारों का विश्लेषण करना ।
2. सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता (डिसेबिलिटी) की समझ विकसित करना।

3. सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन का विश्लेषण करना ।
4. सीखने के कुछ आरम्भिक सिद्धांतों से अवगत होना तथा उनकी आलोचनात्मक समझ बनाना ।
5. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में समाज की क्या भूमिका होती है, इसकी समझ बनाना।
6. सीखने को प्रभावित करने वाले कारक की आलोचनात्मक समझ बनाना।

S-03(कार्य और शिक्षा)

1. कार्य के माध्यम से प्रशिक्षुओं में श्रम एवं कौशल के प्रति सम्मान विकसित करना ।
2. कार्य को अर्थ-निर्माण और ज्ञान सृजन के माध्यम के तौर पर उपयोग करना ।
3. उत्पादक कार्य को स्कूली पाठ्यचर्या के संदर्भ में समझना ।
4. कार्य के माध्यम से विभिन्न तकनीकों एवं कौशलों का विकास करना ।
5. उत्पादक कार्यो के द्वारा अपने परिवेश में बदलाव लाना |

S-04(स्वयं की समझ)

1. प्रशिक्षुओं को एक व्यक्ति के तौर पर अपनी क्षमता, प्रतिभा, चिंतन, धारणा तथा अभिवृति को पहचानने में मदद करना ।
2. प्रशिक्षुओं को अपने तथा अपनी वृत्ति के प्रति सजग बनाना ।
3. प्रशिक्षुओं को अपने जीवन लक्ष्यों के निर्धारण तथा उन्हे प्राप्त करने में मदद करना ।
4. प्रशिक्षुओं को अपने वृत्ति तथा आत्म चेतना को अभिव्यक्ति करने के लिए सक्षम बनाना ।

S-05(विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा)

1. स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की आवधारणा को शारीरिक शिक्षा तथा वर्तमान विद्यालयी वातावरण केसंदर्भ में समझ सकेंगे ।
2. व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय स्वच्छता, साफ-सफाई, प्रदूषण, सामान्य बीमारियों तथा विद्यालय एवं समुदाय में इनके रोकथाम तथा नियंत्रण के उपायों पर चिन्तन कर पाएंगे ।

3. खेलकूद के माध्यम से बच्चे के सर्वांगीण विकास की अवधारणा को समझ पाएंगे ।
4. एथेलेटिक क्षमताओं से जुडे गति के मूल सिद्धान्तों तथा मूल कौशलों को जान पाएंगे जो कि विभिन्न खेलकूद तथा विद्यालय में इन कौशलो को छात्रों तक पहुँचाने के लिए आवश्यक है ।
5. समावेशी खेल कूद तथा खेल आधारित गतिविधियों को पाठ्यचर्या से जोड़ने के लिए वांछित कौशलों तथा तकनीकों का विकास करने में सक्षम हो पाएंगे ।
6. उच्च प्राथमिक स्तर पर सुझाए गए मूल योगासनों तथा ध्यान केन्द्रन विधियाँ सीख व समझ पाएंगे |
7. सीखे गए मूल योगासनों तथा घ्यान केन्द्रण विधियों के माध्यम से छात्रों को शान्त तथा सहज होने के लिए विभिन्न कौशलों को सीखने तथा इनका उपयोग दैनिक जीवन में तनावमुक्त रहने में सहायता प्रदान कर पाएंगे।

S-06(PEDAGOGY OF ENGLISH (Primary Level))

1. To equip student-teachers with a theoretical perspective on English as a Second Language (ESL) .
2. Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching .
3. To understand learners and their learning context .
4. Procedures and techniques for teaching English as a second language.
5. To use textbook materials for transacting effectively.

6.To assess learners' learning outcomes.

S-07(गणित का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर))

1. **गणित सीखने-सिखाने के तरीकों व उनके अंतर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं को समझना।**
2. **विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता एवं उपयोग को समधान ।**
3. **सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में योजना को आवश्यक व महत्व को समझना।**

4. इकाई योजना व सीखन की योजना को समझना।
5. आकलन की अवधरणा, इसके विभिन्न तरीकों व मूल्यांकन अधारित उपचारात्मक शिक्षण को समझना।
6. प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझना।
7. ज्यामितीय आकृतियाँ एवं पैटर्न संबंधी अवधरणाओं को समझना।
8. भिन्नों की आवश्यकता व उपयोग को समझना।
9. भिन्न संख्याओं की संक्रियाएँ को समझना।
10. भिन्न के विभिन्न प्रकारों व उन्हे दशमलव में व्यक्त कर उसे दैनिक जीवन में अनुपयोग को समझना।

S-08(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर))

1.प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में समझ बनाना।

2.प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक भाषायी कौशलों के ले खन और व्याकरणिक पहलुओं को समझना जो प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक हैं।

3.संदर्भ आधारित व्याकरण के महत्व को समझना और उसका हिन्दी शिक्षण में उपयोग करने के कौशल को समझना ।

4.गतिविधि आधारित व्याकरणिक ज्ञान से परिचित होकर उनका कक्षायी उपयोग करना।

5.हिन्दी-भाषा के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के तरीकों से अवगत होना।

6.उद्देश्यपरक सीखने की योजना, उपयुक्त कक्षा प्रक्रियाओं के नियोजन तथा संचालन के बारे में समझ विकसित करना ।

S-09(उच्च-प्राथमिक स्तर (कक्षा 6-8) के किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र)

S-9.A	गणित का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.B	विज्ञान का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.C	सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.D	Pedagogy of English (Upper Primary level)
S-9.E	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.F	संस्कृत का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.G	मैथिली का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.H	बांगला का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)
S-9.I	उर्दू का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर)